लेखक परिचय

प्रोफेसर नरेंद्र भंडारी ने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च मुंबई से पी.एच.डी की डिग्री प्राप्त की और यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सैन डिएगो और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) की भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद में प्लैनेटरी मिशन्स पर शोध कार्य किया। उनको इसरो के 'आउटस्टैंडिंग अचीवमेंट अवॉर्ड', विक्रम साराभाई पुरस्कार, राष्ट्रीय खनीज पुरस्कार, नासा का प्रमाण पत्र और मारवाड़ रत्न पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया है। उन्होंने अंतरिक्ष विज्ञान और जैन दर्शन पर कई पुस्तकें प्रकाशित और संपादित की हैं।

वर्तमान काल में अहिंसा की आवश्यकता

जीवन के सभी आयामों में अहिंसा का महत्त्व है, चाहे वह व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय संबंध हो, अथवा भौतिक, मानसिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक या अन्य कार्य हो। सभी ओरिएण्टल या पूर्वी धर्मों में अहिंसा के आचरण का विशेष महत्त्व है और उसे जीवन शैली का एक आवश्यक अंग माना गया है। यदि किसी ने अहिंसा के संदेश को पूरे विश्व में फैलाया है तो वह महात्मा गाँधी ही है। उन्होंने कई क्षेत्रों में, विशेषकर राजनीति में अहिंसा के प्रयोग किये और सफलता प्राप्त की। भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्रता दिलाने में अहिंसक सिद्धांतो का, विशेषकर सत्याग्रह का, बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसका बाद में डॉ. मार्टिन लूथर किंग, नेल्सन मंडेला, और पूरे विश्व के अन्य नेताओं ने अनुसरण किया। इसलिए यह स्वाभाविक और उचित ही है कि उनके जन्मदिन को संयुक्त राष्ट्र संघ (यूनाइटेड नेशन्स) ने विश्व अहिंसा दिवस घोषित किया है। अहिंसा ऐसा आचरण नहीं है कि उसे एक ही दिन जीवन शैली में लाया जाए परन्तु वह प्रतिदिन, प्रतिक्षण आचरण करने योग्य है। भारतीय मनीषी, विशेषकर जैन तीर्थंकर, मनन चिंतन और ध्यान द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हिंसा दूसरों का तो नाश करती ही है पर स्वयं-नाशक भी है। इसके विपरीत अहिंसा शांति और स्वयं के उत्थान के लिए आवश्यक है। इसलिए अहिंसा को परमोधर्म कहा गया है।

इस सेमिनार का आयोजन 'अहिंसा का उपयोग पृथ्वी को बचाने' के लिए के लिए किया गया है। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम अहिंसा और पृथ्वी की वर्तमान स्थिति को ठीक तरह से समझे। इसलिए इस लेख में पहले हम इन दोनों विषयों की चर्चा करेंगे।

1. अहिंसा का संपूर्ण व्यापक अर्थ: जीव और अजीव अहिंसा

सामान्यतः अहिंसा का अर्थ जीव हिंसा से बचना माना जाता है। यह अहिंसा का एक आवश्यक पर छोटा सा अंग है और अहिंसा की सीमित परिभाषा है। वास्तव में अहिंसा का आचारण बहुत प्रगाढ, और बहु आयामी है। अहिंसा का आचरण क्रिया में तो करना ही चाहिए, पर भाव में अहिंसा होना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। डॉ. कुमारपाल देसाई ने अपने लेख में अहिंसा का विवेचन किया है। सत्य का आचरण, निर्भयता, साहस, बलिदान, त्याग, सहनशीलता, धैर्य, सहअस्तित्व, सौहार्द, विनय, वात्सल्य, करुणा, दया और क्षमा, और जितने भी अच्छे गुण है, वे सब अहिंसा में समाहित है और किसी अवगुण का अहिंसा में समावेश नहीं हो सकता क्योंकि कोई कायर, लोभी, कपटी और घमंडी व्यक्ति अहिंसा का अनुसरण कर ही नहीं सकता। इसीलिए अहिंसा को प्रत्येक धर्म में सर्वोत्तम स्थान दिया गया है।

अहिंसा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अहिंसा पालन से आपको क्या फायदा होता है और मैं इसकी और आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। पुण्य और कर्म बंध आदि पर तो इस अहिंसा का प्रभाव होता ही है, परंतु आप स्वयं पर भी इसका बहुत प्रभाव पड़ता है। यदि आप संपूर्ण भाव से सब जीवों के प्रति अहिंसा का पालन करते हैं तो वो आपसे डरेंगे नहीं, और प्रत्युत्तर में वो भी आपको डराएंगे नहीं। न उनको आप का डर रहेगा न आपको उनका डर। इस प्रकार आप पूर्णतया निर्भय हो सकते हैं। निर्भय होकर जीने का सबसे उच्चतम तरीका है अहिंसा का पालन।

आज मैं अहिंसा के कुछ भौतिक पक्षों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा क्योंकि जब हम दोनों, आध्यात्मिक और भौतिक पक्ष जान लेंगे तब ही अहिंसा को पूर्णतः समझने में सफल होंगे। इसलिए हमने अजीव अहिंसा को भी उतना ही महत्त्व दिया है जितना जीव अहिंसा को। जीव अहिंसा उसका आध्यात्मिक पक्ष है और अजीव अहिंसा उसका भौतिक पक्ष। जैन ग्रंथों में तो स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि 'सर्वभूतेषु संयम अहिंसा'। आज के समय में इसका अत्यधिक महत्त्व है क्योंकि अजीव के नाश करने का परिणाम शीघ्र, उसी क्षण होता है पर कदाचित जीव को नाश करने का परिणाम कालांतर में होता है। मैं पृथ्वी के वातावरण की बात कर रहा हूँ जो अभी सबसे ज्वलंत विषय है और हमारा जीवन, हमारी पूरी सभ्यता, वातावरण पर निर्भर है। यही इस लेख का मुख्य विषय है और हम इसकी चर्चा बाद में विस्तार से करेंगे।

2. धरती की वर्तमान परिस्थिति: पृथ्वी विनाश के कगार पर

पूरे ब्रह्मांड में पृथ्वी ही ऐसा इकलौता ग्रह है जहाँ हम जानते हैं कि जीवन विद्यमान है और कहीं भी, अभी तक, जीवन के लक्षण नहीं मिले हैं। पृथ्वी की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करने के पहले हमें इसके जियोलॉजिकल या भूगर्भीय इतिहास पर एक नजर डालना आवश्यक है क्योंकि ऐसी धारणा है कि इतिहास अपने आप को दोहराता रहता है; जो पहले हुआ वही दोबारा हो सकता है।

2.1 पृथ्वी का भौतिक और रासायनिक विकास

पृथ्वी की उत्पत्ति एक ग्रह के रूप में लगभग 4.5 अरब (बिलियन) वर्ष पहले हुई थी। उसके लगभग एक बिलियन वर्ष के बाद, अर्थात आज से 3.5 बिलियन वर्ष पहले पृथ्वी पर जीवन का उद्गम एक-कोशीय जीव, काई, के रूप में हुआ और जीवन विकास करते करते आज मानव तक पहुँच गया है। विकास की यह यात्रा सुगम नहीं थी परंतु इस विकास के क्रम में कई बाधाएं और व्यवधान आये। पिछले 550 मिलियन वर्ष में जीवन की पांच महाविनाश की घटनाएं हुई, जिनमें कभी कभी तो 90% प्रजातियां नष्ट हो गई। प्रारंभ में जीवन की उत्पत्ति काई के रूप में हुई थी पर प्रकृति इतनी शक्तिशाली है कि प्राकृतिक क्रियाओं द्वारा जीवन का विकास स्वतः ही काई से मनुष्य तक होता गया। जीवन में कॉम्प्लेक्सिटी के साथ साथ, मष्तिष्क और चेतना का विकास भी हुआ। यह विकास क्रमिक था। एक कोशिय जीव से बहु-कोशिय जीव बने, स्थावर से फिर चलने वाले जीव बने। फिर उनकी इन्द्रियां बनी और एक से पांच इन्द्रिय वाले जीव अस्तित्व में आए और पेड़ पौधे, स्तनधारी जीव आदि बने। विकास के क्रम को जारी रखने के लिये हमको आवश्यकता है कि हम पृथ्वी की रक्षा करें और इसमें व्यवधान न आने दें।

भौतिक और रासायनिक दृष्टि से देखें तो लगभग 2 बिलियन वर्ष पहले, जब पृथ्वी की उम्र आधी थी तो कई घटनाएं घटी जिनमें प्रमुख ऑक्सीजन का प्रादुर्भाव था, जो नगण्य से बढ़कर धीरे धीरे 21% तक हो गया। आरंभ में पृथ्वी पर केवल मिथेन, अमोनिया, कार्बन डाइऑक्साइड, हाइड्रोजन, और पानी था उसमें केवल बेक्टिरिया रह सकते थे। अपने भूगर्भित इतिहास में पृथ्वी पर आईस स्टेज भी आई और पूरी पृथ्वी बर्फ़ से ढक गई जिसको हम 'स्नोबॉल अर्थ' कहते हैं। पृथ्वी अपने भूगर्भिक इतिहास में पांच बार हिमयुग से गुजरी है। कई बार ज्वालामुखी, भूकंप, और बाह्य ग्रहों के टकराने से पृथ्वी अत्यधिक गरम हुई, और उस पर भयंकर विनाश हुआ। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पृथ्वी की स्टेट बदलती रही। पृथ्वी का मेग्नेटिक फील्ड भी बदलता रहता है। इसका मेग्नेटिक फील्ड कभी कभी एकदम विपरीत दिशा में चला जाता है। ऐसी आशंका है कि हजार वर्ष में उत्तरी ध्रुव दक्षिणी ध्रुव बन जायेगा दक्षिणी ध्रुव उत्तरी ध्रुव। ऐसी घटनाएं कभी कभी अकस्मात होती है। इससे पृथ्वी पर जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है।

2.2 जीवन में विकास की क्रांतियां और विनाश के चक्र

पिछले 550 मिलियन वर्ष में पृथ्वी पर पांच विनाशकारी घटनाएँ रिकॉर्ड की गई है जिसका उल्लेख डॉ. पोखरना ने भी अपने लेख में किया है। इन mass extiction की घटनाओं में, जिन्हें प्रलय कहा जा सकता है, पृथ्वी के बहुत से जीव मारे गए, जीव ही नहीं, अधिकांश प्रजातियाँ लुप्त हो गई। तीसरी विनाशकारी घटना जो Permian-Triassic काल (250 मिलियन वर्ष पूर्व) हुई वह पृथ्वी

पर जीवन के संदर्भ में बहुत भयंकर घटना थी। इसमें 90 प्रतिशत प्रजातियां समाप्त हो गयी थी। और पिछली घटना 65 मिलियन वर्ष पूर्व Cretaceous -Tertiary काल में, एक धूमकेतु या क्षुद्रग्रह के टकराने से हुई जिसमें 70% प्रजातियां नष्ट हो गई, जिसमें डायनोसोर भी थे। अत: कारण कोई भी हो, पृथ्वी पर जीवन का विनाश तो अवश्यंभावी है। पर फॉसिल रिकॉर्ड से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्येक विनाश के बाद जो नई प्रजातियां विकसित हुई या उभरी, वह पहले से अधिक विकसित और सक्षम थी।

पृथ्वी पर ग्रह टकराते रहते हैं, प्लेट टेक्टोनिक्स होती रहती है, ज्वालामुखी फूटते रहते हैं; ज्वालामुखी से ही भारत में दक्षिण का पठार बना। इन सब आकस्मिक घटनाओं के अतिरिक्त पृथ्वी को कई जलवायु चक्र भी प्रभावित करते हैं, जिनमें मुख्य तापक्रम चक्र लगभग 21000, 42000 और 100000 वर्ष के हैं जिनमें तापक्रम ± 3 डिग्री सेल्सियस तक बदल जाता है और पृथ्वी पर हिम युग या उष्ण युग का प्रादुर्भाव होता है। जलवायु चक्करों के अतिरिक्त अनेक खगोलीय चक्र भी है जैसे सूर्य मण्डल आकाशगंगा मे लगभग 250 मिलियन वर्ष में एक चक्कर लगाता है।

पृथ्वी के इतिहास का उल्लेख करने का हमारा मंतव्य यह है कि ऐसी कितनी ही प्रबल घटनाएं होती हैं जो हमारे काबू में नहीं है। इसलिए हमको हम मानव-जनित परिवर्तनों को सही परिपेक्ष में, प्राकृतिक परिवर्तनों के संदर्भ में, देखना चाहिए।

इस सब चर्चा से दो निष्कर्ष निकल कर आते हैं। प्रथम तो जीवन के विकास, भौतिक भूगर्भीय और रासायनिक परिवर्तन को देखने से यह लगता है की यह सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं; एक दूसरे पर निर्भर है। समय समय पर प्रकृति ने हमको वही संसाधन उपलब्ध कराए जिससे जीवन का विकास हो सके। और दूसरा यह कि प्रत्येक विनाश काल, या एक्सटिंक्शन की घटनाके पश्चात, अचानक से नई प्रजातियां, जो पहले से बहुत विकसित थी, उभर कर आई। यह दोनों प्रकृति के गाइडिंग प्रिंसिपल्स लगते हैं। यह ऐसे सिद्धांत है जिसके अंतर्गत प्रकृति अपना कार्य करती है और ऐसा लगता है की प्रकृति किसी उद्देश्य से, जीव और चेतना के विकास की दिशा में जा रही है।

3. वर्तमान परिस्थितियां

अब ऐसा लगता है कि आधुनिक युग में, पृथ्वी पर, सब परिस्थितियां हमारे अनुकूल है, तापमान सही है, सभी आवश्यकता की वस्तुएं उपलब्ध हैं। पर ऐसा सदैव ही होता रहा है और पृथ्वी पर जो भी जीव थे वातावरण उनके अनुकूल ही था। अंतर केवल इतना है कि अब मानव ही, अपनी क्रियाओं द्वारा वातावरण दूषित कर रहा है और पृथ्वी को उसके विनाश के मार्ग की ओर धकेल रहा है जहाँ पृथ्वी का ही नहीं अपितु पूरी मानव सभ्यता का विनाश हो जाने की संभावना है। पोल्यूशन, ग्रीन हाउस इफेक्ट,

असीमित खनन, इत्यादि से इस बात की अधिक संभावना है कि पृथ्वी गरम हो जायेगी, और हमारे रहने लायक नहीं रहेगी। यदि हमने कुछ सीमाएं लांघ ली तो पृथ्वी रन-अवे ग्रीनहाउस की स्थिति में चली जाएगी।

3.1 ग्रीन हाउस इफेक्ट और रन अवे ग्रीनहाउस

सबसे पहले हम ग्रीन हाउस इफेक्ट की बात करें जिससे इस पृथ्वी के प्रत्येक व्यक्ति का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। कार्बन डाइऑक्साइड और मिथेन आदि ग्रीनहाउस गैसे हैं जो सूर्य से जो गर्मी आती है, उसको धरती से परिवर्तित होने के बाद भी पृथ्वी के वातावरण से बाहर अंतरिक्ष में नहीं जाने देती; उसे यही एब्जॉर्ब कर लेते हैं और वह गर्मी पृथ्वी पर ही रह जाती है। इसकी वजह से पृथ्वी का तापक्रम लगातार बढ़ता जा रहा है। अगर ये कार्बन डाइऑक्साइड बढ़ती रही तो हमारी पृथ्वी भविष्य में शुक्र ग्रह की तरह गर्म बन सकती है। कई दृष्टिकोणों से पृथ्वी और सूर्य जुड़वा भाई की तरह, एक से है। दोनों सूर्य से लगभग एक ही दूरी पर हैं, अर्थात् उन पर सूर्य की गर्मी लगभग बराबर मात्रा मे ही गिरती है।शुक्र का औसत अर्ध-व्यास ६००० किलोमीटर है जब कि पृथ्वी का ६३०० किलोमीटर है, और दोनों एक ही मिट्टी से बने हैं। दोनों का वजन और आयतन भी करीब करीब एक सा ही है। इस प्रकार शुक्र ग्रह आकार, कंपोज़िशन, सूर्य से दूरी में करीब करीब पृथ्वी जैसा ही है। केवल अंतर यह है रनअवे ग्रीनहाउस की वजह से शुक्र का तापक्रम लगभग 640 डिग्री सेंटिग्रेड हो गया है परन्तु हमारे सौभाग्य से पृथ्वी का तापक्रम अभी भी बहुत अनुकूल है और यहाँ का औसत तापमान लगभग 20 डिग्री सेल्सियस है जहाँ पानी द्रव और बर्फ़, दोनों के रूप में उपलब्ध है। प्राकृतिक तापक्रम चक्र पर मानव-जनित (एन्थ्रोपोजेनिक) क्रियाओं का प्रभाव भी पिछली शताब्दी में काफी बढ़ गया है और दोनों के सम्मलित प्रभाव से अब हम उस टिप्पिंग पर पहुँच गए हैं जहाँ अगर गर्मी इसी प्रकार बढ़ती गई तो पृथ्वी रनअवे ग्रीन हाउस के चक्कर में फंस जाएगी और शीघ्र ही शुक्र जैसी हो जाएगी।

एक रूसी वैज्ञानिक मिलांकोविच ने बताया कि पृथ्वी पर जो ठंडे और गर्म दौर आते हैं और जो जलवायुचक्र चलते हैं ये सूर्य की किरणों की गर्मी के कारण है। पर एक सूर्य चक्र में सूर्य के विकिरण को नापा गया तो पता चला कि यह परिवर्तन 0.01 प्रतिशत से भी कम होता है परन्तु पृथ्वी का वातावरण इस परिवर्तन को amplify कर देता है। इसे butter fly effect (तितली -प्रभाव) का नाम दिया गया है। बटर फ्लाई प्रभाव का तात्पर्य यह है है कि यदि प्रशांत महासागर के तट पर,समुद्र में एक तितली पंख फड़फडायेगी तो वह प्रभाव हिन्द महासागर में आते आते एक चक्रवात में बदल जायेगा। एल निनो और ला नीना इसी बटरफ्लाई इफेक्ट का प्रभाव है। भारत में जो मानसून होता है वो ब्राज़ील के तट पर क्या हो रहा है, उस पर निर्भर करता है। भारत में मॉनसून की तीव्रता, और शुरुआत ब्राज़ील के तट पर कुछ डिग्री टेम्पेरचर परिवर्तन पर निर्भर है।

प्राकृतिक घटनाओं और चक्रों का प्रभाव तो हम पर पड़ता ही है, परन्तु एक बात स्पष्ट है कि हम पृथ्वी को जितनी क्षति पहुंचाएंगे तो पृथ्वी भी हमको किसी न किसी रूप में, उतनी ही क्षति पहुँच जाएगी और पृथ्वी के क्षतिग्रस्त होने के साथ ही हमारी सभ्यता का भी विनाश हो जाएगा। तो हमारी यह धरोहर, ज्ञान, जीवन, जो प्रकृति ने हमको दिया है, और जैसे विकसित होने में अरबों साल लगे हैं, उसका भी नाश हो जायेगा। इस दृष्टि से हमको पृथ्वी और हमारी सभ्यता और अन्य जीवो को बचाना अत्यंत आवश्यक है। मुझे ऐसा लगता है, और जैसा कि डा. पोखरना ने अपने लेख में विस्तार से बतलाया है, पृथ्वी आज विनाश के कगार पर खड़ी है। स्थिति कुछ ऐसी है कि यदि हमने पृथ्वी की कुछ सीमाओं को लांघ लिया तो वह एक विक्षिप्त अवस्था में जा सकती है।

4 पृथ्वी जीवंत ग्रह और एक मैक्रो-ऑर्गेनिज्म:

यह विचारणीय है कि प्रकृति ने हमको इतनी सुन्दर पृथ्वी दी है जो सब प्रकार से हमारे अनुकूल है: पानी, हवा, जीव और पर्याप्त मात्रा में खाद्य हैं, सब हैं परन्तु हमने उसका ठीक प्रकार से उपयोग नहीं किया है। और जो उसकी हालत आज है, तो उसका उसको बचाने का केवल एक मात्र विकल्प अहिंसा है। हमने सबसे बड़ी गलती यह की है कि हमने पृथ्वी को केवल मिट्टी का एक पिंड मान लिया पर वास्तव में यह एक जीवंत और डायनैमिक सिस्टम है, जिसमे जीव और अजीव दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं, और संतुलन में हैं। पृथ्वी पर किसी का भी वस्तु का अस्तित्व बेकार नहीं है, सभी एक दूसरे के पूरक हैंऔर एक दूसरे को सपोर्ट करते हैं, चाहे वह वायुमंडल हो, समुद्र हो, जियोस्फियर हो या बायोस्फियर। इन सब के कई भाग हैं, लाखों करोड़ों हिस्से हैं, जो वैसे तो अलग अलग लगते हैं परन्तु आप देखेंगे कि इन सब भागों में हारमोनी है, सब क्रियाएं साइक्लिक हैं और सब coherent हैं। coherent का मतलब सब एक क्रम में, स्वतः, सिन्क्रोनस हैं और आवश्यकता पड़ने पर अपने आप, बिना एक दूसरे के कार्य में बाधा पहुंचाते हुए चलते हैं। सब समय पर अपना काम करते हैं। समुद्र अपना काम करता है वायुमंडल अपना काम करता है। ऐसा लगता है कि पूरी पृथ्वी एक ही जीव है एक macro-organism है। जैसे अपने शरीर में कुछ केमिकल तत्व हैं और आत्मा है, वैसे ही पृथ्वी में भी कुछ केमिकल्स हैं, जिन से जियोस्फीयर एटमोस्फियर और हाइड्रोस्फियर बने हैं और बायोस्फियर उसकी आत्मा है। और ये ऐसा बेलेन्स है कि पानी की एक बून्द भी व्यर्थ नहीं जाती है, और न ही हवा का एक अणु व्यर्थ जाता है। सब क्रियाएं साइक्लिक और एफिशिएंट हैं। इसमें कुछ भी वेस्टेज नहीं है।

5. मानव जनित प्रभाव

जैसा डॉक्टर पोखरना ने अपने लेख में बताया, हर वर्ष 15000 करोड़ पशु हमारे भोजन के लिये मारे जा रहे हैं, और पिछले 50 से 60 साल में 50 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं । यही क्रम चलता रहा तो वो दिन दूर नहीं है जब पृथ्वी पर सब जीव विलुप्त हो जाएंगे । दूसरी बात यह समझने की है, कि मानव-जनित प्रभाव नगण्य सा दिखता है परंतु वातावरण एक एम्पलीफायर की तरह कार्य करता है , और पृथ्वी का संतुलन बिगाड़ने में सक्षम है। टिपिंग प्वाइंट को पार करने से पृथ्वी catastrophic state में जा सकती है। टिपिंग प्वाइंट को हम इस प्रकार समझें कि जैसे पानी को हम उबालते हैं तो 99.9 डिग्री तक कुछ नहीं होगा। इसी प्रकार पृथ्वी की सहनशक्ति है उसको हम कितना ही प्रताड़ना देते रहें वो सहती रहेगी पर जब तापक्रम 100 डिग्री पर पहुँच जायेगा तो पानी एकदम भाप में बदल जायेगी। तो यह जो नया मॉडल है उसमें वातावरण प्रत्येक प्रभाव को एमपलीफाई करता है और लीनियर से नॉन-लीनियर क्षेत्र में ले जाता है, जो अनप्रेडिक्टेबल है। अब पृथ्वी पर कई सीमाएं टिपिंग प्वाइंट पर पहुँच गई है। अगर एक छोटी सी घटना भी यहाँ हो जाये तो पृथ्वी अपना phase बदल लेगी और एक दूसरी, अनप्रेडिक्टेबल स्थिति ग्रहण कर लेगी जो या तो बहुत गर्म होगा जहाँ तापमान सैंकड़ों डिग्री या बहुत ठण्डा हो सकता है या वो उसका मेग्नेटिक फील्ड बदल जायेगा या कुछ भी हो सकता है। इसलिए हमको, कम से कम हमारी गतिविधियों से, पृथ्वी का संरक्षण करना पड़ेगा। यह उदाहरण यह भी बतलाता है कि एक आदमी के अहिंसा पालन करने से कितना असर पड़ता है। यदि एक मांसाहारी एक दिन के लिए भी शाकाहारी हो जाय तो पृथ्वी पर इतना प्रभाव पड़ेगा, कि हम लंबे समय तक टिपिंग प्वाइंट से बच जाएंगे। तो इसी प्रकार अगर एक प्रतिशत लोग 365 दिन शाकाहारी हो जाये तो पृथ्वी 99 डिग्री पर ही अटक जायेगी, 100 डिग्री, अर्थात टिपिंग प्वाइंट तक नहीं पहुँचेगी। हमारे अस्तित्व में पृथ्वी पर जो जीव जन्तु हैं उनका बहुत बड़ा रोल है और अगर वो समाप्त हो गए तो हम भी जीवित नहीं रह पायेंगे और हमारा विकास फिर से reset हो जाएगा। तो पृथ्वी वापस अपने पहली वाली स्थिति में चली जायेगी और हमें वापस एक नयी शुरुआत करनी पड़ेगी।

यह तो अहिंसा का भौतिक पक्ष है पर अहिंसा का आध्यात्मिक पक्ष भी है। सभी धर्मों में, चाहे वह ईसाई, बौद्ध, सिख, हिंदू या जैन धर्म हो, अहिंसा को मोक्ष का मार्ग बतलाया गया है। कोई नास्तिक भी हो या किसी भी धर्म में श्रद्धा हो, तब भी उसको अपने अस्तित्व को बचाने के लिए, जीवित रहने के लिए भी अहिंसा की आवश्यकता है। प्रत्येक प्राणी जीवित रहना चाहता है और प्रत्येक प्राणी सुखी रहना चाहता है तो अगर हम जीवित और सुखी रहना चाहते हैं तो कम से कम उसके लिये हमको पृथ्वी को बचाने के लिये अहिंसा का मार्ग अपनाना चाहिये।

जैन धर्म का एक बहुत बड़ा सूत्र है 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' । अगर दुनिया के सारे जीवों को खत्म कर दें तो एक अकेला इंसान भी जीवित नहीं रहेगा। मैं आज यहाँ क्यों जीवित हूँ? सच्चे अर्थों में इसकी वजह आप हैं। हम सब एक दूसरों से जुड़े हुए हैं। इसके वैज्ञानिक कारण भी हैं। हम इसको एक दूसरे के साथ मल्टीप्ल कनेक्टिविटी कह सकते हैं जहाँ कोई भी क्रिया या वस्तु या जीव का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, सब एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। । इन सिद्धांतो का उपयोग अहिंसा को अच्छी तरह से समझने के लिए किया जाना चाहिये।

6. आधुनिक सन्दर्भ में हमारा कर्तव्य:

प्रकृति तो जो करेगी वह करेगी ही, उसको तो हम नहीं रोक सकते। प्राकृतिक जलवायु चक्र पृथ्वी को गर्म कर सकते हैं या ठंडा, उसके लिए सूर्य पर होने वाले परिवर्तन, अंतरिक्ष से आने वाले धूमकेतु, एस्टेरॉइड्स और उल्का पिंड, इन पर हमारा कुछ भी कंट्रोल नहीं है हालांकि ऐसे कई प्रयास किए जा सके कि पृथ्वी उनसे टकराने से बच जाए। अब जब पृथ्वी विनाश के कगार पर खड़ी है, और मानव की गतिविधियाँ आग में घी डालने का काम कर रही है तो हमारा क्या कर्तव्य है? इस अवस्था में इस परिस्थिति में हम एक काम तो अवश्य कर सकते हैं कि हम प्रकृति के कार्य में कम से कम इंटरफियर करें। इसके लिए जीवहिंसा, अजीवहिंसा और कम से कम संसाधनों का उपयोग करना जिसे आज कल मिनीमलआइजेशन कहा जाता है, हमारा प्राथमिक कर्तव्य है। जितनी हो सके उतनी कम ऊर्जा, जल, खाद्य, कपड़े आदि का उपयोग करना चाहिए और कम से कम कचरा (गार्बेज) उत्पन्न करना चाहिए। यह तो हम बिना कष्ट के कर सकते हैं। यही सब दर्शनों का निचोड़ है और यही वर्तमान युग की आवश्यकता। गांधीजी इसके एक ज्वलंत उदाहरण है जिन्होंने इसको चरितार्थ किया था इसलिए आज उनको अनुसरण करने की आवश्यकता है।